10 ईर्ष्या : तू न गई मेरे मन से

रामधारी सिंह 'दिनकर' के इस रोचक निबंध में जीवन के रोज़मर्रा के व्यवहारों पर टिप्पणी है और सही-संतुलित जीवन के प्रति एक दृष्टिकोण विकसित करने की सीख है। जीवन-कौशल अध्ययन का एक उल्लेखनीय पहलू है। तनावों को कम करने में व्यक्ति की अपनी अंतरात्मा खास योगदान देती है। यह निबंध इस अंतर्निहित समझ को विकसित करता है। शीर्षक रोचक है और पहली नज़र में पढ़ने का आमंत्रण देता है। बिहार के यशस्वी साहित्यकार दिनकर के रचना संसार की विविधता को भी समझने में पाठ सहायक है।

मेरे घर के दाहिने एक वकील रहते हैं, जो खाने-पीने से अच्छे हैं, दोस्तों को भी ख़ूब खिलाते हैं और सभा-सोसाइटियों में भी काफी भाग लेते हैं। बाल-बच्चों से भरा-पूरा परिवार, नौकर भी सुख देने वाले और पत्नी भी अत्यंत मृदुभाषिणी। भला एक सुखी मनुष्य को क्या चाहिए ?

मगर, वे सुखी नहीं हैं। उनके भीतर कौन-सा दाह है, इसे मैं भली-भाँति जानता हूँ। दरअसल उनकी बगल में जो बीमा एजेंट हैं, उनके विभव की वृद्धि से वकील साहब का कलेजा जलता रहता है। वकील साहब को भगवान ने जो कुछ दे रखा है, वह उनके लिए काफी नहीं दीखता। वे इस चिंता में भुने जा रहे हैं कि काश! एजेंट की मोटर, उसकी मासिक आय और उसकी तड़क-भड़क भी मेरी हुई होती।

ईर्ष्या का यही अनोखा वरदान है। जिस मनुष्य के हृदय में ईर्ष्या घर बना लेती है, वह उन चीजों से आनंद नहीं उठाता, जो उसके पास मौजूद है; बल्कि उन वस्तुओं से दु:ख उठाता है, जो दूसरों के पास है। वह अपनी तुलना दूसरों के साथ करता है। और इस तुलना में पक्ष के सभी अभाव उसके हृदय पर दंश मारते रहते हैं। दंश के इस दाह को भोगना कोई अच्छी बात नहीं है। मगर ईर्ष्यालु मनुष्य करे भी तो क्या? आदत से लाचार होकर उसे यह वेदना भोगनी पड़ती है। एक उपवन को पाकर भगवान को धन्यवाद देते हुए उसका आनंद नहीं लेना और बराबर इस चिंता में निमग्न रहना कि इससे भी बड़ा उपवन क्यों नहीं मिला, एक ऐसा दोष है जिससे ईर्ष्यालु व्यक्ति का चरित्र भी भयंकर हो उठता है। अपने अभाव पर दिन-रात सोचते-सोचते वह सृष्टि की प्रक्रिया को भूलकर विनाश में लग जाता है और अपनी उन्नति के लिए उद्यम करना छोड़कर वह दूसरों को हानि पहुँचाने को ही अपना श्रेष्ठ कर्तव्य समझने लगता है।

ईर्ष्या की बड़ी बेटी का नाम निंदा है। जो व्यक्ति ईर्ष्यालु होता है, वही व्यक्ति बुरे किस्म का निंदक भी होता है। दूसरों की निंदा वह इसलिए करता है कि इस प्रकार, दूसरे लोग जनता अथवा मित्रों की आँखों से गिर जाएँगे और तब जो स्थान रिक्त होगा, उस पर अनायास मैं ही बिठा दिया जाऊँगा।

मगर, ऐसा न आज तक हुआ है और न होगा। दूसरों को गिराने की कोशिश तो, अपने को बढ़ाने की कोशिश नहीं कही जा सकती। एक बात और है कि संसार में कोई भी मनुष्य निंदा से नहीं गिरता। उसके पतन का कारण अपने ही भीतर के सद्‌गुणों का ह्रास होता है। इसी प्रकार कोई भी मनुष्य दूसरों की निंदा करने से अपनी उन्नति नहीं कर सकता। उन्नति तो उसकी तभी होगी, जब वह अपने चरित्र को निर्मल बनाए तथा अपने गुणों का विकास करे।

ईर्ष्या का काम जलाना है। मगर सबसे पहले वह उसी को जलाती है जिसके हृदय में उसका जन्म होता है। आप भी ऐसे बहुत-से लोगों को जानते होंगे जो ईर्ष्या और द्‌वेष की साकार मूर्ति हैं और जो बराबर इस फ़िक्र में ही रहते हैं कि कहाँ सुननेवाले मिले कि अपने दिल का गुबार निकालने का मौका मिले। श्रोता मिलते ही उनका ग्रामोफोन बजने लगता है और वे बड़ी ही होशियारी के साथ एक-एक कांड इस ढंग से सुनाते हैं, मानो, विश्व-कल्याण को छोड़कर उनका और कोई ध्येय नहीं हो। मगर, जरा उनके अपने इतिहास को भी देखिए और समझने की कोशिश कीजिए कि जब से उन्होंने इस सुकर्म का आरंभ किया है, तब से वे अपने क्षेत्र में आगे बढ़े हैं या पीछे हटे हैं। यह भी कि अगर वे निंदा करने में समय और शक्ति का अपव्यय नहीं करते तो आज उनका स्थान कहाँ होता ? चिंता को लोग चिता कहते हैं। जिसे किसी प्रचंड चिंता ने पकड़ लिया है, उस बेचारे की जिंदगी ही खराब हो जाती है। किंतु ईर्ष्या शायद चिंता से भी बदतर चीज है, क्योंकि वह मनुष्य के मौलिक गुणों को ही कुंठित बना डालती है। मृत्यु, शायद, फिर भी श्रेष्ठ है बनिस्बत इसके कि हमें अपने गुणों को कुंठित बनाकर जीना पड़े। चिंता-दग्ध मनुष्य समाज की दया का पात्र है। किंतु ईर्ष्या से जला भुना आदमी ज़हर की एक चलती-फिरती गठरी के समान है जो हर जगह वायु को दूषित करती फिरती है।

ईर्ष्या मनुष्य का चारित्रिक दोष ही नहीं है, प्रत्युत, इससे मनुष्य के आनंद में भी बाधा पड़ती है। जब भी मनुष्य के हृदय में ईर्ष्या का उदय होता है, सामने का सूर्य उसे मद्धिम-सा दीखने लगता है, पक्षियों के गीत में जादू नहीं रह जाता और फूल तो ऐसे हो जाते हैं, मानो, वे देखने योग्य ही नहीं हों।

आप कहेंगे कि निंदा के बाण से अपने प्रतिद्वंद्वियों को बेधकर हँसने में एक आनंद है और यह आनंद ईर्ष्यालु व्यक्ति का सबसे बड़ा पुरस्कार है। मगर यह हँसी मनुष्य की नहीं, राक्षस की हँसी होती है और आनंद भी दैत्यों का आनंद होता है।

ईर्ष्या का संबंध प्रतिद्वंद्वियों से होता है, क्योंकि भिखमंगा करोड़पति से ईर्ष्या नहीं करता। यह एक ऐसी बात है जो ईर्ष्या के पक्ष में भी पड़ सकती है, क्योंकि प्रतिद्वंद्वियों से भी मनुष्य का विकास होता है। किंतु, अगर आप संसार-व्यापी सुयश चाहते हैं तो आप, रसेल के मतानुसार, शायद, नेपोलियन से स्पर्धा करेंगे। मगर, याद रखिए कि नेपोलियन भी सीजर से स्पर्धा करता था और सीजर सिकंदर से तथा सिकंदर हरक्युलिस से, जिस हरक्युलिस के बारे में इतिहासकारों का यह मत है कि वह कभी पैदा ही नहीं हुआ।

ईर्ष्या का एक पक्ष सचमुच ही लाभदायक हो सकता है जिसके अधीन हर आदमी, हर जाति और हर दल अपने को अपने प्रतिद्वंद्वियों का समकक्ष बनाना चाहता है। किंतु यह तभी संभव है, जबकि ईर्ष्यालु व्यक्ति यह महसूस करता है कि कोई चीज़ है, जो उसके भीतर नहीं है; कोई वस्तु है, दूसरों के पास है किंतु वह यह नहीं समझ पाता है कि इस वस्तु को प्राप्त कैसे करना चाहिए। गुस्से में आकर वह अपने किसी पड़ोसी, मित्र या समकालीन व्यक्ति को अपने से श्रेष्ठ मानकर उससे जलने लगता है, जबकि वे लोग भी अपने-आपसे शायद, वैसे ही असंतुष्ट हों।

आपने यह भी देखा होगा कि शरीफ़ लोग अक्सर यह सोचते हुए अपना सिर खुजलाया करते हैं कि फलां आदमी मुझसे क्यों जलता है, मैंने तो उसका कुछ नहीं बिगाड़ा; और अमुक व्यक्ति इस कदर मेरी निंदा में क्यों लगा हुआ है? सच तो यह है कि मैंने सबसे अधिक भलाई उसीकी की है।

ये सोचते हैं मैं तो पाक-साफ हूँ, मुझमें किसी भी व्यक्ति के लिए दुर्भावना नहीं है; बल्कि, अपने दुश्मनों की भी मैं भलाई ही सोचा करता हूँ। फिर ये लोग मेरे पीछे क्यों पड़े हुए हैं? मुझमें कौन-सा वह ऐब है, जिसे दूर करके मैं इन दोस्तों को चुप कर सकता हूँ?

ईश्वरचंद्र विद्यासागर जब इस तजुरबे से होकर गुजरे तब उन्होंने एक सूत्र कहा, 'तुम्हारी निंदा वही करेगा, जिसकी तुमने भलाई की है।'

और नीत्से जब इस कूचे से होकर निकला, तब उसने ज़ोरों का एक ठहाका लगाया और कहा कि यार, ये तो बाज़ार की मक्खियाँ हैं जो अकारण हमारे चारों ओर भिनभिनाया करती हैं।

ये सामने प्रशंसा और पीछे-पीछे निंदा किया करती हैं। हम इनके दिमाग़ पर बैठे हुए हैं, ये मक्खियाँ हमें भूल नहीं सकतीं और चूँकि ये हमारे बारे में बहुत सोचा करती हैं, इसलिए ये हमसे डरती हैं और हम पर शंका भी करती हैं।

ये मक्खियाँ हमें सजा देती हैं हमारे गुणों के लिए। ऐब को तो ये माफ़ कर देंगी, क्योंकि बड़ों के ऐब को माफ़ करने में भी एक शान है, जिस शान का स्वाद लेने को ये मक्खियाँ तरस रही हैं।

जिनका चरित्र उन्नत है, जिनका हृदय निर्मल और विशाल है, वे कहते हैं, 'इन बेचारों की बातों से क्या चिढ़ना? ये तो खुद ही छोटे हैं।'

मगर, जिनका दिल छोटा और दृष्टि संकीर्ण है, वे मानते हैं कि जितनी भी बड़ी हस्तियाँ हैं, उनकी निंदा ही ठीक है। और जब हम इनके प्रति उदारता और भलमनसाहत का बर्ताव करते हैं, तब भी वे यही समझते हैं कि हम उनसे घृणा कर रहे हैं। और हम चाहे उनका जितना उपकार करें, बदले में हमें अपकार ही मिलेगा।

दरअसल, हम जो उनकी निंदा का जवाब नहीं देकर चुप्पी साधे रहते हैं, इसे भी वे हमारा अहंकार समझते हैं। खुशी तो उन्हें तभी हो सकती है, जब हम उनके धरातल पर उतरकर उनके छोटेपन के भागीदारी बन जाएँ।

सारे अनुभवों को निचोड़कर नीत्से ने एक दूसरा सूत्र कहा, 'आदमी में जो गुण महान समझे जाते हैं, उन्हीं के चलते लोग उससे जलते भी हैं।'

तो ईर्ष्यालु लोगों से बचने का क्या उपाय है? नीत्से कहता है कि 'बाज़ार की मक्खियों को छोड़कर एकांत की ओर भागो। जो कुछ भी अमर तथा महान है, उसकी रचना और निर्माण बाज़ार तथा सुयश से दूर रहकर किया जाता है। जो लोग नए मूल्यों का निर्माण करने वाले हैं, वे बाजारों में नहीं बसते, वे शोहरत के पास भी नहीं रहते हैं।' जहाँ बाज़ार की मक्खियाँ नहीं भिनकतीं, वह जगह एकांत है।

यह तो हुआ ईर्ष्यालु लोगों से बचने का उपाय। किंतु, ईर्ष्या से आदमी कैसे बच सकता है?

ईर्ष्या से बचने का उपाय मानसिक अनुशासन है। जो व्यक्ति ईर्ष्यालु स्वभाव का है, उसे फालतू बातों के बारे में सोचने की आदत छोड़ देनी चाहिए। उसे यह भी पता लगाना चाहिए कि जिस अभाव के कारण वह ईर्ष्यालु बन गया है, उसकी पूर्ति का रचनात्मक तरीका क्या है । जिस दिन उसके भीतर यह जिज्ञासा जागेगी उसी दिन से वह ईर्ष्या करना कम कर देगा।

रामधारी सिंह 'दिनकर'

शब्दार्थ

ह्रास	–	गिरावट, कमी
ग्रामोफोन	–	(रेकार्ड प्लेयर) शब्द ध्वनियों को टेप करके पुन: सुनाने वाला यंत्र
ध्येय	–	लक्ष्य
सुकर्म	–	अच्छा काम
बदतर	–	ख़राब
बनिस्बत	–	बजाय, अलावा
प्रतिद्वंद्वी	–	विपक्षी, मुकाबला करने वाला
व्यापी	–	फैलाव
स्पर्धा	–	प्रतियोगिता
संकीर्ण	–	तंग, सिकुड़ा हुआ
उन्नत	–	ऊँचा, अच्छा, विकसित

प्रश्न-अभ्यास

पाठ से

1. वकील साहब सुखी क्यों नहीं हैं ?
2. ईर्ष्या को अनोखा वरदान क्यों कहा गया है ?
3. ईर्ष्या की बेटी किसे और क्यों कहा गया है ?
4. ईर्ष्यालु से बचने का क्या उपाय है ?
5. ईर्ष्या का लाभदायक पक्ष क्या हो सकता है ?

पाठ से आगे

1. नीचे दिए गए कथनों का अर्थ समझाइए

(क) जो लोग नए मूल्यों का निर्माण करने वाले हैं, वे बाज़ारों में नहीं बसते, वे शोहरत के पास भी नहीं रहते।

(ख) आदमी में जो गुण महान समझे जाते हैं, उन्हीं के चलते लोग उससे जलते भी हैं।

(ग) चिंता चिता समान होती है।

2. अपने जीवन की किसी ऐसी घटना के बारे में बताइए जब

(क) किसी को आपसे ईर्ष्या हुई हो।

(ख) आपको किसी से ईर्ष्या हुई हो।

3. अपने मन से ईर्ष्या का भाव निकालने के लिए क्या कर

व्याकरण

निम्नलिखित शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

(1) मृदुभाषिणी –

(2) चिंता –

(3) सुकर्म –

(4) बाज़ार –

(5) जिज्ञासा –

इन्हें भी जानिए

वाक्य विचार की पूर्णता को प्रकट करनेवाले वैसे शब्द स
जिसमें कर्त्ता और क्रिया दोनों होते हैं। जैसे मोहन

रचना के आधार पर वाक्य तीन प्रकार के हैं

1. सरल या साधारण वाक्य
2. मिश्र वाक्य
3. संयुक्त वाक्य

सरल या साधारण वाक्य :

जिस वाक्य में एक क्रिया एवं एक कर्त्ता होता है, उसे '
कहते हैं। जैसे–वर्षा होती है।

मिश्र वाक्य :

जिस वाक्य में एक साधारण वाक्य के अतिरिक्त दूसरा
वाक्य कहते हैं। जैसे:–वह कौन–सा मनुष्य है, जिसने महात्मा गाँधी
मैं खाना खा चुका तो वह आया।

संयुक्त वाक्य :

जिस वाक्य में साधारण या मिश्र वाक्य का मेल संयोजक
संयुक्त वाक्य कहते हैं। जैसे:–मैंने खाना खाया और भूख मिट गई
पेट में दर्द होने लगा, और दर्द इतना बढ़ा कि तुरन्त डॉक्टर को

2. बॉक्स में दी गई जानकारी के आधार पर तीनों प्रकार के व
पाठ से चुनकर लिखिए ।

गतिविधि

1. पाठ में आए महान विभूतियों के नामों की सूची बन
बारे में जानिए ।

1.

A. Warmer

Ask children t
they have.

This is the way
We wash our face,
Wash our face,
Wash our face.
This is the way we